शबे कदर की फज़ीलत

हजरत मुफ्ती अहमद खानपूरी दब. हवाला- महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

शबे कदर अल्लाह ने खुसूसीयत के साथ उम्मत मुहम्मदीय्यह को अता फरमायी हे रिवायतो मे आता हे के नबी करीमﷺ का इरशाद हे मेरी उम्मते मुहम्मदीय्यह की उम्रो का तजकिरा किया जैसा के नबी करीम का इरशाद हे के मेरी उम्मत की उम्रे ६० से लेकर ७० के दरमीयान हे आम तौर पर उम्मते मुहम्मदीय्यह के लौग ६० / ७० के दरमीयान रुखसत हो जाते हे कोई जरा आगे बड गया तो बड गया वर्ना आम तौर पर यही उम्रे रेहती हे अपनी उम्मत की उम्रो को याद किया और उस्के मुकाबले मे अगली उम्मतो को जो उम्रे दी गयी थी इस्को जब नबी करीमﷺ ने देखा तो आपको ये ख्याल हूवा के इबादत मे मेरी उम्मत उन्का मुकाबला नही कर सकती जिस्की वजह से नबी करीमﷺ के दिल मे एक गम किसी केफीयत पैदा हूवी इस्से मालूम होता हे के नबी करीमﷺ को उम्मत के साथ कितना प्यार और ताल्लुक था के ये चीझ भी आपके लिये गम का जरिया हूवी.

तो इस्पर अल्लाह की तरफ से सूरे कदर उतारी गयी जिस्मे अल्लाह ने इरशाद फरमाया शबे कदर हज़ार महीनो से बेहतर हे और हज़ार महीनो का हिसाब लगाया गया तो ८३ साल और ४ महीने होते हे और फरमाया

गया के इस्से बेहतर हे अगर कोई आदमी ८३ साल और ४ महीने इबादत करे उस्को शबे कदर मे इबादत का सवाब उस्से भी ज्यादा मिलेगा और वो जियादती कितनी होगी वो भी उस्मे नही बतलायी गयी हे तो जाहिर हे के एक रात का इतना ज्यादा सवाब हे हजरत शैख (रह) फरमाते हे के अगर किसी आदमी को ज़िन्दगी मे दस राते भी मिल जाये तो यु समझीये के ८३३ साल बल्के उस्से ज्यादा का सवाब मिलेगा इसलिये ये बडे एहतेमाम की चीझ हे.

बाझ रिवायतो मे ये भी हे के एक मर्तबा नबी करीमﷺ ने बनी इसराइल के एक आबिद का तजकिरा किया जिसने ५०० साल तक अल्लाह की इबादत की ये सुनकर सहबाए किराम(रदी) को ये ख्याल हूवा के हमे तो ये मकाम हासिल नही हो सकता और इस्पर अफसोस भी हूवा के हम बावजूद चाहने के इस्पर अमल नही कर सकते इस्पर सूरे कदर नाजिल हूवी जिस्मे बतलाया गया के शबे कदर एक हज़ार महीनो से बेहतर हे अब जाहिर हे अगर ऐसी चंद राते आदमी को मयस्सर हो जाये तो उस्की कामयाबी और मुराद पूरी होने के लिये काफी हे. अल्लाह फरमाते हे के हमने कुरान को लयलतुल कदर मे नाजिल किया पूरी सूरे ही शबे कदर की फज़ीलत को बयान करने के लिये नाजिल की गयी हे.

आगे इस्के फज़ाइल और इस्मे नमाज़ और इबादत के फज़ाइल बतला रहे हे.

हजरत अबू हुरैरा(रदी) से मन्कुल हे के नबी करीमﷺ ने

इरशाद फरमाया जो आदमी लयलतुल कदर मे इमान और एहतेसाब के साथ खडा रहा यानी उसने नमाज़ पढी और इबादत की तो उस्के पिछले सारे गुनाह माफ कर दिये जायेगे. (मुत्तफकुन अलयहि हदीष नं.११८९)

इफदातः इस्की तफसीर करते हूवे उलमाने लीखा हे के नमाज़ पढना ही ज़रूरी नही बल्के इबादत के दूसरे जित्ने तरीके हे जैसे तिलावत दुवा तस्बीहात वगैरा इन्मे से किसी भी इबादत के तरीके से अल्लाह की खूश्नूदी हासिल की और अपने अवकात को इस्मे सर्फ किया तो इस्को ये फज़ीलत हासिल हो जायेगी.

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर(रदी) फरमाते हे के नबी करीमﷺ के बहुत से सहाबा को ख्वाब मे शबे कदर का आखरी सात रातो मे होना दिखलाया गया जब सहाबा ए किराम(रदी) ने अपने ये ख्वाब नबी करीमﷺ के सामने बयान किया तो नबी करीमﷺ ने इरशाद फरमाया मे देख रहा हु के तुम सब के ख्वाब आखरी सात रात के मुताल्लीक मुत्तफीक हो रहे हे इसलिये जो आदमी शबे कदर को तलाश करना चाहे तो उस्को चाहिये के आखरी सात रातो मे तलाश करे. (मुत्तफकुन अलयहि हदीष नं.११९०)

इफदातः ख्वाब मे ये बतलाया गया के रमज़ान की आखरी सात रातो मे शबे कदर हे अगर तीस का महीना हो तो आखरी सात राते २४ से लेकर ३० तक होती हे और अगर उन्तीस का महीना हो तो २३ से लेकर आखिर तक होती हे इन सारी रातो मे इस्को तलाश करने का एहतेमाम किया जाये.

उलमाने लीखा हे के कई हजरात का एक ही तरह का ख्वाब देखना भी इस ख्वाब के सच्चा होने की अलामत हे यानी एक तरह की चीझ कई लोगो ने ख्वाब मे देखी और सब बयान कर रहे हे तो ये गोया इस बात की निशानी समझी जायेगी के ये ख्वाब सच्चा हे जैसा के अज़ान के मुताल्लीक आता हे के जब नबी करीमﷺ को ये फिकर लाहिक हूवी के लोगो को नमाज़ के वास्ते बुलाने के लिये कौन्सा तरीका इखतियार किया जाये इस्के लिये मशवेरा हूवा और जब कोई बात तैय नही हूवी तो फिर रात को बहुत से लोगो ने ख्वाब देखा जिस्मे अज़ान का तरीका बतलाया गया इस मौका पर भी नबी करीमﷺ ने यही फरमाया के तुम सब लोगो के ख्वाब एक चीझ पर मुत्तफिक हो रहे हे यहा पर भी कई लोगो ने ख्वाब देखे और कई लोगो का एक तरह का ख्वाब देखना इस ख्वाब के सच्चा होने की अलामत हे लिहाज़ा नबी करीमﷺ फरमाते हे के जो आदमी शबे कदर को तलाश करना चाहे तो उस्को चाहिये के आखरी सात रातो मे तलाश करे रमज़ान के महीने मे आखरी सात रातो मे जाग लेना कोई मुशकिल नही हे लौग मामूली मामूली मकासिद के लिये मामूली मामूली गर्जो के लिये चंद पैसो के खातिर रात भर जागते हे कोई आदमी अल्लाह की खूश्नूदी हासिल करने और ८३ साल की इबादत का सवाब हासिल करने के लिये अगर चंद राते जाग ले तो ये कोई मुशिकल काम नही हे.

हजरत आइशा(रदी) फरमाती हे के नबी करीमﷺ रमज़ान के आखरी अशरा मे एतेकाफ फरमाया करते थे और इरशाद फरमाते थे शबे कदर को रमज़ान के आखरी अशरा मे तलाश करो. (मुत्तफकुन अलयहि हदीष नं.११९१)

हजरत आइशा(रदी) फरमाती हे के नबी करीमﷺ ने इरशाद फरमाया के शबे कदर को रमज़ान के आखरी अशरा की ताक २१, २३, २५, २७, २९ रातो मे तलाश करो. (मुत्तफकुन अलयहि हदीष नं.११९२)

इफदात: जम्हूर उलमा यही फरमाते हे के आखरी अशरा से मुराद २१ से लेकर आखीर तक हे चाहे महीना २९ का हो या ३० का हो अलबत्ता अल्लामा इब्ने हज़म (रह) जो बडे आलिम और मुहद्दीष गुझरे हे वो फरमाते हे के अगर महीना ३० का हो तो आखरी अशरा २१ से लेकर ३० तक कहा जायेगा और अगर २९ का हो तो २० से लेकर २९ तक शुमार किया जायेगा. लैकीन चूंके एतेकाफ की इब्तेदा सब के नज़दीक २० शाम और २१ की रात से होती हे इसलिये अकसर ने वही मुराद लिया हे और वही राजेह भी हे.

वैसे शबे कदर के मुताल्लीक बहुत सारे अकवाल हे ५० कौल हे के कब होती हे बाझ हजरात इस तरफ गये हे.

अल्लामा इब्ने अरबी (रह) ने भी कहा हे के साल भर मे घुम्ती रेहती हे.

हजरत शाह वलीउल्लाह साहब (रह) फरमाते हे के शबे

कदर दो होती हे एक तो वो जिस्मे अल्लाह की तरफ से लोगो के मुताल्लीक फैसले होते हे और बडे बडे मामलात तैय होते हे वो तो साल भर मे घुमती रेहती हे और कुरान जिस साल नाजिल हूवा और वो रमज़ानुल मुबारक मे थी इसलिये के कुरान के नुज़ूल दो हे एक तो लौहै महफूझ से आस्माने दुन्या तक जो एकबार मे हूवा हे और दूसरा नुज़ूल आस्मानी दुन्या से नबी करीमﷺ पर वो २३ साल तक अलग अलग वक्तो मे उतरता रहा ईन्ना अन्झलनाहु फी लयलतील कदरि से मुराद ये हे के अल्लाह ने लौहै महफूझ से आस्मानी दुन्या पर जो उतारा वो इसी रात मे उतारा जो उस साल रमज़ान मे थी.

और दूसरी वो रात जिस्मे दुवाये और इबादते कबूल होती हे और अन्वारात का एक खास इन्तेशार होता हे वो अलबत्ता रमज़ान ही मे होती हे वैसे अकसर हजरात इस तरफ गये हे के शबे कदर रमज़ान ही मे होती हे और रमज़ान मे आखरी अशरा ही मे और इस्मे भी आखरी अशरा की ताक रातो २१, २३, २५, २७, २९ मे होती हे अगरचे बाझो ने पूरे अशरा ही मे ज्यादा तलाश करने को कहा हे.

नबी करीमﷺ के ज़माने मे २१, २३ और २४ मे होना रिवायतो मे आया हे और हजरत उबय बिन कअब(रदी) जो अकाबिर सहाबा मे से हे वो तो फरमाते हे के २७ ही को शबे कदर होती हे इसलिये आदमी को रमज़ान की रातो मे खास तौर से एहतेमाम करना चाहिये.

हजरत शैख (रह) फरमाते हे के आदमी को पूरे साल रात

की दो नमाज़ो यानी मगरिब और इशा को जमात के साथ अदा करने का एहतेमाम करना चाहिये इसलिये फजर सुब्है सादिक के बाद होती हे लिहाज़ा वो तो दिन की नमाज़ मे आ जाती हे इसलिये कम से कम दो नमाज़े जमात के साथ अदा करने का पूरे साल एहतेमाम करोगे तो शबे कदर मे इबादत हो ही जायेगी और इस सूरत मे बहुत बडा सवाब मिल जायेगा और ये फज़ीलत हासिल हो जायेगी.

सहाबा ए किराम(रदी) इन रातो मे इबादत का खास एहतेमाम करते थे.

हजरत उमर(रदी) रमज़ान का पूरा महीना सोते नही थे रात भर इबादत मे मशगूल रेहते थे.

हजरत उस्मान(रदी) से भी पूरा पूरा कुरान एक रात मे पढना साबित हे.

ताबेईन (रह) मे से बहुत से हजरात वो थे जो साल भर रात मे हमेशा जागह करते थे.

हजरत सईद बिन मुसय्यीब (रह) जो अकाबिरे ताबेईन मे से हे उन्के मुताल्लीक हे के पचास साल तक उन्होने इशा के वुज़ू से फजर की नमाज़ अदा की.

हजरत इमाम अबू हनीफा (रह) के मुताल्लीक भी यही हे वो हजरात रात भर इबादत का एहतेमाम करते थे.

हजरत शद्दाद के मुताल्लीक लीखा हे वो फरमाते थे ए अल्लाह जहन्नम की आग ने मेरी नीन्द उडा दी.

हजरत सिलह बिन अस्यम (रह) के मुताल्लीक लीखा हे के वो रात भर इबादत करते थे और जब सहर का वक्त

होता तो सुब्हे सादिक से पेहले ये दुवा करते थे या अल्लाह उस बात की तो मुझ मे हिम्मत नही हे के मे तुझ से जन्नत मांगू बस जहन्नम के अज़ाब से मुझे बचा लेना. बहरहाल ये हजरात इबादत करने के बाद डरते रेहते थे उन्ही के अवसाफ मे ये आयत हे वबिलअस्हारी हुम यस्तगिफरून रात के आखरी हिस्सा मे वो लौग अपने गुनाहो से माफी मांगते हे गोया रात भर की अपनी इबादत को भी वो लौग नैकी नही समझते बल्के यु समझते हे के पता नही अल्लाह के यहा कबूल हूवी या नही.

कुरान पाक सूरे मोमिनून/६० का तरजुमा: वो लौग जब अल्लाह की इबादत करते हे तो ऐसी हालत मे करते हे के उन्के दिल डरते रेहते हे किसी ने हजरत आइशा(रदी) से पूछा कया गुनाह करने के बाद डरे सहमे रेहते हे उन्होने फरमाया ऐसा नही हे गुनाह करने का तो सवाल ही नही बल्के उन लोगो का हाल ये हे के नैक अमल अंजाम देने के बाद इस बात से डरे रेहते हे के पता नही हमारा ये अमल अल्लाह की बारगाह मे कबूल भी हूवा या नही अल्लाह के दरबार की शान के मुताबिक हे भी या नही कही ऐसा न हो के मुंह पर मार दिया जाये इसलिये हमे भी उन केफीयात के साथ इबादत का एहतेमाम करना चाहिये.

हमारे मुआशरे की आम वबा

आज हम मे एक बडी मुसीबत ये हे के मुबारक रात होती हे तो कहते हे के बडी रात हे जागो हालाके जागने का

मतलब सिर्फ जागना नही हे बल्के जाग कर इबादत करना हे बहुत से लौग सिर्फ जागने ही को काफी समझते हे और किसी भी तरीके से वक्त गुझारी मजलिस बाझी लतीफा बाझी और पता नही कैसे कैसे कामो मे मशगूल हो जाते हे बाझ लौग गुनाहो मे मशगूल हो जाते हे नवजवान मोटर साईकल लेकर घूमने निकल जाते हे चोपाटी के चक्कर लगाते हे ये सब बिल्कुल गलत तरीके हे अरे अल्लाह के बन्दो अगर यही सब करना था तो फिर तू सो गया होते ये ज्यादा अच्छा था. ये रात सिर्फ जागने की नही हे और सिर्फ जागना मकसूद भी नही हे बल्के मकसूद तो इबादत हे अगर जाग कर उस्को जाये करना हे तो उस के बजाये आदमी सो जाये ये ज्यादा अच्छा हे ताके इतना वक्त गुनाहो से तो अपने आपको बचा कर रख सके.

शैख सअदी (रह) का वाकिया पेहले भी कभी सुना चूका हु के उन्को उन्के वालिद साहब ने बचपन ही से रात को तहज्जुद मे नमाज़ के लिये उठने की आदत डाली थी वो खूद फरमाते हे के एक मर्तबा ऐसा हूवा के हम तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठे जब नमाज़ से फारिग हुवे तो देखा के दूसरे लौग सो रहे थे मे उस वक्त बच्चा था मेने वालिद साहब से कहा ये लौग ऐसे पडे हुवे हे जैसे के मुरदे पडे हो तो वालिद साहब ने मुझ से कहा बेटा तू भी अगर सोया रेहता तो ज्यादा अच्छा था इस बात से के लोगो की गीबत मे मशगूल हूवा तो दर हकीकत जागने का मतलब ये हे के अल्लाह की इबादत मे मशगूल हूवा जाये और एसी मुबारक रातो और एसे मुबारक अवकात मे छोटे बडे हर

गुनाह से अपने आपको बचाने का खुसूसीयत के साथ एहतेमाम करना चाहिये खुदा न करे उन रातो मे अगर कोई आदमी गुनाह मे मुब्तेला हो गया तो जैसे इन रातो मे इबादत का सवाब बहुत बडा हे इसी तरीका से उन्मे गुनाह की वजह से वबाल भी बहुत हे जैसे कोई आदमी हरम मे जाकर इबादत करेगा तो एक लाख नैकी का सवाब मिलता हे इसी तरह वहा अगर गुनाह करेगा तो गुनाह का वबाल भी उसी मुनासबत से हूवा करता हे.

हजरत आइशा(रदी) फरमाती हे के नबी करीमﷺ का हाल ये था के जब रमज़ान का आखरी अशरा आता था तो नबी करीमﷺ रात भर इबादत मे मशगूल रेहते थे और अपने घर वालों को भी जगाते थे नबी करीमﷺ खूद भी खूब कोशिश और मेहनत से काम लेते थे और नबी करीमﷺ इजार बांध लिया करते थे. (मुत्तफकुन अलयहि हदीष नं. ११९३)

इफदात: इस्से ये भी मालूम हूवा के आदमी को इस बात की तरफ भी तवज्जुह करनी चाहिये बहुत से हजरात अपने तौर पर तो उस्का एहतेमाम करते हे लैकीन अपने घर वालों पर तवज्जुह नही करते अगरचे उन्को पूरी रात न जगाये लैकीन तरगीब दे कर कुछ न कुछ अमल करवाने की आदत डालनी चाहिये धीरे धीरे आदत पड जायेगी यानी किसी काम के लिये कमर बांध लेना और बिलकुल तय्यार हो जाना.

हजरत आइशा(रदी) फरमाती हे के नबी करीमﷺ रमज़ान के महीने मे इबादत वगैरा मे इतनी तकलीफ उठाते थे के रमज़ान के अलावा मे इतनी नही उठाते थे और

रमज़ान के आखरी अशरा मे तो इतनी ज्यादा जो और किसी दिन मे नही हूवा करती थी. (मुस्लीम शरीफ हदीष नं. ११९४)

इफदात: जैसा के उपर बतलाया था रमज़ान का महीना खास तौर पर वसूल करने और अल्लाह को राज़ी करने का महीना हे इसलिये आदमी को खास तौर पर इबादत की तकलीफ उठानी चाहिये और इस्मे भी आखरी दस रातो मे तो और ज्यादा एहतेमाम करना चाहिये.

हजरत आइशा(रदी) फरमाती हे के मेने अर्झ किया ए अल्लाह के रसूल! आप मुझे बतलाये के अगर मुझे मालूम हो जाये के कौन्सी रात शबे कदर हे तो मे उस्मे खास तौर पर कौन्सी दुवा मांगू नबी करीमﷺ ने फरमाया ये दुवा मांगो अल्लाहुम्मा इन्नका अफुव्वून तुहिब्बुल अफवा फअफू अन्ना, ए अल्लाह तू माफ करने वाला हे माफी को पसंद करता हे लिहाज़ा मेरे गुनाहो को माफ करदे. (तिरमिजी शरीफ हदीष नं. ११९५)

इफदात: कुरबान जाइये हजराते सहाबा पर के मुबारक रातो मे कया मांगना चाहिये वो भी उन्हो ने नबी करीमﷺ से पूछ लिया और नबी करीमﷺ ने वो बतला दिया फिर भी हम उस्का एहतेमाम नही करते हम तो अपने तौर पर अपने दिमाग मे जिन चीझो को लिये बेठे हे उन्ही को मांगते रेहते हे नबी करीमﷺ ने जिन चीझो की ताकीद फरमायी हे और जिन चीझो की तालीम दी हे उधर हमारा कभी ख्याल भी नही जाता.

इस दुवा के ज़रिये इतनी बडी चीझ मंगवाई गयी हे के अगर वो मिल जाये तो दौनो जहान की कामयाबी मिल

गयी जो आदमी जहन्नम से दूर कर दिया गया और जन्नत मे दाखिल किया गया तो वही हे हकीकी कामयाब अल्लाह की तरफ से अगर मगफिरत का परवाना मिल जाये गुनाहो से माफी दे दी जाये तो ये सब्से बडी कामयाबी की चीझ हे. मे ये नही केहता के मेरी इबादतो को कबूल कर लिया जाये बल्के मेरी गुनाहो पर माफी का कलम फैर दिया जाये तो हकीकत तो ये हे के अल्लाह की तरफ से मगफिरत का परवाना मिल जाना ये बहुत बडी नेमत हे इसलिये मगफिरत के तलब करने का खास एहतेमाम करना चाहिये. हम लोगो का भी अजीब मिझाज बना हूवा हे के हम अपनी दुन्या की इधर उधर की सारी चीझे मांगते रेहते हे लैकीन भूले से भी मगफिरत मांगने की तरफ ध्यान नही जाता हमारी निगाहो मे बस मांगने के लिये भी दुन्या ही की चीझे हे आखिरत की नेमते और नबी करीमﷺ ने जो चीझे मांग कर बतलायी हे उन्की तरफ भी तवज्जुह करने की झरूरत हे.

अल्लाह हमे तौफीक अता फरमाये. आमीन.